नई तालीम और आधुनिक शिक्षा पद्धति की समीक्षा

डॉ. अशोक परमार*

सारांश

अहिंसक समाज रचना में नई तालीम की शिक्षा का विशिष्ट स्थान है। स्पर्धा के इस युग में मूल्य स्थापन, मूल्य परिवर्तन एवं मूल्यों को उजागर करने के लिए नई तालीम प्रमुख औजार है। आधुनिक शिक्षा पद्धति पर विचार करने से ज्ञात होता है कि केवल चार दीवारें और पुस्तक पर आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए तो आने वाली पीढ़ी से समाजोत्कर्ष की आशा रखना व्यर्थ हो जाएगा। अगर छात्रों को समाज के पहरी बनाना है तो नई तालीम की शिक्षा अपनाना होगा। यहां नई तालीम की शिक्षा और आधुनिक शिक्षा पद्धति में पाये जाने वाले अंतर को उजागर करके दोनों शिक्षा पद्धतियों की तुलनात्मक समीक्षा की है।

प्रस्तावना

नई तालीम शिक्षा पद्धति के शैक्षिक पहलू में प्रमुख बात यह है कि बचपन से हम जो ज्ञान प्राप्त करते है उसकी पद्धति क्या है? उसे टिकाऊ कैसे बनाया जाए? यह सीखना है। नई तालीम की शिक्षा पद्धति में यह सर्वमान्य विचार है कि सभी क्षेत्र का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से दिया जाए। कोई भी नया ज्ञान प्राप्त कराने के लिए मानक पद्धति को अपनाया जाए। नई तालीम में रचनात्मक प्रवृतियां, ग्राम विकास, समूहजीवन, समाजसेवा, निरक्षरता निवारण, महिला उत्स्थान, राष्ट्र निर्माण की तालीम दी जाती है।

नई तालीम की संकल्पना

नई तालीम सिर्फ सात से चौदह साल के बच्चों की शिक्षा तक ही सीमित नही है बल्कि गर्भाधान संस्कार से लेकर अंत्योष्ठि तक की तालीम है।''

–गांधी जी।

''नई तालीम शिक्षा अर्थात् नई तालीम का सार तत्व कायम रहे किन्तु उसका बाहय स्वरूप रहे, वह है नित्य नई तालीम।''

–विनोबा जी।

''नई तालीम शिक्षा का सीधा संबंध स्वदेशी एवं स्वावलंबन से है। अत: स्थानीय परिस्थिति से सीखना ही नई तालीम है।''

–मार्जरी साईकस।

नई तालीम शिक्षा का महत्व

नई तालीम शिक्षाक्रम को चलाने के लिए शुरू से यह समझ लेना जरूरी है कि नई तालीम क्या है? बापू ने इस युग के लिए नई तालीम का ही चयन क्यों किया? इसे समझे बिना इसका प्रारंभ करने का अर्थ है, इसे बुनियादी शिक्षा न रखकर पुराने जमाने की या व्यवसायिक शिक्षा बनाना।

नई तालीम शिक्षा पद्धति का प्रमुख तत्व यह है कि बचपन से हम जो ज्ञान प्राप्त करते है उसकी पद्धति क्या हो सकती है? प्राप्त ज्ञान को टिकाऊ कैसे बनाया जाएँ? यह सर्वमान्य है कि प्रत्यक्ष अनुभव ही ज्ञान प्राप्ति तथा उसको स्थायी बनाने का मानक उपाय है। गुड के संदर्भ में हम चाहे जितनी भी मौखिक संकल्पनाएँ स्पष्ट करें किन्तु जब तक गुड का स्वाद बालक की जिहवा तक नही जायेगा उसकी मूल संकल्पना स्पष्ट नही होगी। वैसे ही जैसे हाथी के विषय में चाहे हजारों पृष्ठ पढ़ें किन्तु हाथी को देखने से जो ज्ञान प्राप्त होता है उतना ज्ञान किताबें पढ़ने से नही होता। अत: नई तालीम शिक्षा पद्धति की प्रमुख विशेषता यह है कि बालक को प्रत्यक्ष अनुभव कराना। वर्तमान शिक्षा पद्धति में छात्रों को प्राथमिक कक्षाओं में कई विषय का ज्ञान अनिवार्य रूप से दिया जाता है, जो कि प्रमुख रूप से कृषि, गोपालन, कताई, बुनाई, सफाई-विज्ञान, सफाई साधन-सामग्री निर्माण, आहार तथा रसोई शास्त्र, स्वयंपाकी रसोई, स्वास्थ्य विज्ञान का ज्ञान दिया जाता है। उपर्युक्त सभी विषयों का अध्ययन करना प्रत्येक वर्ष सभी छात्रों के लिए लाजमी है।

*हिन्दी शिक्षक महाविद्यालय, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

रचनात्मक प्रवृतियाँ

गांधी जी ने शिक्षा के विकास में अनुबंध एंव स्वदेशी शिक्षा की हिमायत करके नई तालीम शिक्षा की संकल्पना दी। नई तालीम शिक्षा की रचनात्मक प्रवृत्तियों के रूप में प्रमुखत: छात्रों को खादी ग्रामोद्योग की प्रवृत्तियाँ जैसे कि तेल, साबुन, तेलघानी, विभिन्न मसाले बनाना आदि उद्योग छात्रों को प्रत्यक्ष रूप से सीखाया जाता है।

ग्राम विकास के मुख्य कार्य

ग्राम विकास के कार्यों का प्रत्यक्ष अनुभव देने हेतु छात्रों को गाँवों की मुलाकात करवाते है। इस शिक्षा विधि में पदयात्रा एवं ग्राम शिविरों के माध्यम से ग्रामसभा, ग्राम समस्याएँ, ग्रामजनों, ग्रामविकास आदि का परिचय करवाते है। इन सब क्रियाओं के माध्यम से छात्र भिन्न-भिन्न प्रदेश के लोगों से परिचित होते है। जैसे बिहार में आये बाढ़ के अन्तर्गत असरग्रस्त गाँवों में जाकर छात्र ग्रामजनों से मिलकर तत्काल समय में आजीविका कैसे प्राप्त हो सकती है? इस विषय का ज्ञान लोगों को करवाते है। पदयात्रा और ग्रामशिविर के दौरान छात्र चाहे किसी भी वर्ग का हो, उसे गाँव में जाकर विभिन्न लोगों के घर में दोपहर और रात का भोजन लेने के लिए कहा जाता है, जिससे छात्र की इस राह में मार्गदर्शक और मार्गरक्षी के रूप में अध्यापक भी छात्रों के साथ ही रहता है। इस शिक्षा विधि से छात्र चाहे किसी भी वर्ग का हो उसे भूमि का ज्ञान, पानी की व्यवस्था, ग्राम शिक्षण, पुस्तकालय संचालन, प्रौढ़ शिक्षा, शालेय भण्डार व्यवस्था, ग्राम समिति, ग्रामसभा, पशुपालन, कृषि, प्रकल्प कार्य आदि का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से दिया जाता है।

व्यक्तित्व विकास एवं समूहजीवन की प्रवृत्तियाँ

नई तालीम शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का संर्वांगी विकास है। छात्रों के संर्वांगी विकास में मानसिक, कौशलगत, स्वास्थ्य संबंधी और आध्यात्मिक विकास का समावेश होता है। छात्रों के व्यक्तित्व का विकास, आत्मविश्वास को बढ़ाना और उनकी ग्रहण शक्ति का विकास करना। उपर्युक्त सभी बाबतों की शिक्षा के लिए नई तालीम शिक्षा पद्धति उपयोगी है। नई तालीम शिक्षा पद्धति में समूह प्रार्थना, समूह कताई, उत्सव मनाना, प्रवास, समूह स्वयंपाकी भोजन, रसोईघर संचालन, समूह कवायत, खेल-कूद, विभिन्न स्पर्धाएँ, नेतृत्व विकास की तालीम आदि बाबतों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

मुलाकात के दौरान एक नई तालीम की विद्यालय में हमें देखने मिला था कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के बच्चों के द्वारा उपयोग किया गया। पानी व्यर्थ न जाए इसलिए एक नीम के पेड़ बाल्टी और मग रखा गया था, छात्रों जो पानी का उपयोग करें वह नीम के पेड़ में ही जाएँ ऐसी व्यवस्था बनाई गई थी। साथ-साथ उस पेड़ के रखरखाव की जिम्मेदारी भी छात्र ही उठा रहे थे। अत: नई तालीम पद्धति में बालक का आत्मविश्वास बढ़े और वह बचपन से ही जिम्मेदारी संभाले इसके प्रकार की पोषक प्रवृत्तियाँ की शिक्षा दी जाती है। अत: नई तालीम शिक्षा पद्धति से बालक को समाज का आदर्श नागरिक बनाने की तालीम प्राप्त होती है।

नई तालीम शिक्षा एक अनिवार्य विषय

नई तालीम शिक्षा की परिभाषा जो गांधी जी ने आजीवन शिक्षा के रूप में बताया है। नई तालीम की शिक्षा छात्रों के आसपास की कुदरती और सामाजिक स्थिति से अनुकूल किसी उत्पादक उद्योग द्वारा होनी चाहिए। नई तालीम शिक्षा में ऐसे उद्योग का चयन करना चाहिए जिससे बालक को शिक्षा भी मिलें एंव उद्योग द्वारा बालक कौशल भी सीखें और वह उद्योग जीवनलक्षी हो।

नई तालीम शिक्षा में बौद्धिक विकास का महत्तम अवकाश है।

प्राचीन काल में बौद्धिक विकास का सूत्र था -

''आवृत्ति सर्वशास्त्राणाम् बोद्यादपि गरिमसी''

अर्थात्-सभी शास्त्रों की आवृत्ति (प्रवत्ति) करना समझते से ही श्रेष्ठ है। बाद में लोगों ने उस प्रक्रिया को छोड़ दिया और पुस्तक पढ़कर उस प्रक्रिया को अपनायी। मनुष्य का स्वाभाविक पुरूषार्थ ही नई तालीम शिक्षा का माध्यम है। शिशु-विहार के बच्चों का अपना प्रत्यक्ष पुरूषार्थ नही होता है, उनके लिए दूसरे पुरूषार्थ करते है।

नई तालीम शिक्षा के कुछ अनिवार्य कार्य है, जैसे –

1. अन्याय प्रतिकार करना।
2. शोषण विहिन समाज रचना का कार्य।
3. नैतिक ग्राम संगठनों की रचना करना।
4. निम्न वर्ग की आजीविका के लिए प्रयास करना।
5. अंधश्रद्धा, कुरिवाजों को दूर करना।
6. सर्वधर्म संभाव को दूर करना।
7. अस्पृश्यता निवारण का प्रयास करना।

नई तालीम शिक्षा संबंधी चिंतन

पाठ्यक्रम में मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्थान होना चाहिए।

1. छात्रों को अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ उद्योग और श्रमदान भी करवाना चाहिए।
2. शिक्षण के आधार पर समस्त जीवन का निर्माण होना चाहिए।
3. शिक्षा और विज्ञान का घनिष्ठ संबंध रखना क्योंकि विज्ञान से छात्रों की अवलोकन शक्ति और तुलनात्मक शक्ति का विकास होता है।
4. अभ्यासक्रम में इतिहास को प्रमुख स्थान देना।
5. स्त्री और पुरूष की शिक्षा समान होनी चाहिए।
6. शिक्षा में स्वावलंबन को स्थान होना चाहिए।
7. सर्वधर्म समभाव, अस्पृश्यता निवारण आदि को ध्यान में रखकर सहअभ्यास प्रवृत्तियों का नियोजन करना चाहिए।

नई तालीम शिक्षा में तीन प्रकार की विद्यापीठों की संकल्पना इस प्रकार है:

1. छात्रालय विद्यापीठ 2. ज्ञानपीठ 3. गुरूओं की विद्यापीठ।

नई तालीम शिक्षा में उपर्युक्त बाबतों की शिक्षा से छात्रों का संर्वांगी विकास होता है एवं छात्र समाज का अधिक उपयोगी अंग बन सकता है। हमारी शिक्षा चरित्र निर्माण एंव कर्तव्य बोध की शिक्षा होनी चाहिए। गांधी जी शिक्षा के माध्यम से एक ऐसी समाज व्यवस्था कायम करना चाहते थे, कि जिस में मानवीय दुख लेशमात्र शेष न रहे। प्रत्येक व्यक्तिगत स्वावलंबी होकर समाज को शुद्ध एवं सम्पन्न बनाने में अपना योगदान दे। गांधी जी की दृष्टि में शिक्षा का अर्थ है, एक विशेष प्रकार का जीवन जीना और सीखना यही ''नई तालीम'' है।

आधुनिक शिक्षा

धरती पर इंसान का प्रतिरूप है। वह जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त सीखता एवं सिखाता है। यह उसकी वृत्ति है। वृत्ति की आवृति में आदर्श, आचार, अनुभव का आकलन उसके जीवन मूल्य के आधार है। संस्कार, सेवा, सहयोग, समन्वय उसकी वृत्ति व्यवहार में समाविष्ट हो इसके लिए शिक्षा से निरंतर सम्पर्क आवश्यक है, क्योंकि "Education is Life and Life is Education" शिक्षा से ज्ञान, मान और शान में लाभ होता है। ज्ञान, मान और शान मनुष्य जीवन की धरोहर है। अगर शिक्षा से सीखने और सिखाने वाले दोनों को लाभ हो तो क्यों न हम सिखाते वक्त हृदय का शिक्षण दे।

आधुनिक शिक्षा की संकल्पनाएँ

''शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वह सत्य की खोज कर सके और उस सत्य को अपना बनाते हुए उसको व्यक्त कर दे''

रविन्द्रनाथ टैगोर।

''शिक्षा से अभिप्राय बालक के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के संर्वांगी प्रकटीकरण से है।''

गांधी जी।

आधुनिकीकरण का विस्तृत अर्थ है दृष्टिकोण में बदलाव लाना।

आधुनिक शिक्षा का महत्व

आधुनिक शिक्षा का महत्व देखा जाए तो कोठारी शिक्षा आयोग ने सर्वप्रथम शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का मुख्य साधन मानते हुए, कहा था कि शिक्षा में क्रांति की आवश्यकता है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारे द्वारा अत्यंत वांछित, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्रांति होगी, जिससे हम शैक्षिक प्रगति कर सकेंगे। आधुनिक शिक्षा पद्धति छात्रों के भविष्य के लिए, उनके जीवन को सुसमृद्ध बनाने के लिए और देश की

आवश्यकताओं पर खरी उतरेगी। आधुनिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु नीति-निर्धारण के तत्व हमें भावी विचारधाराएँ प्रस्तुत कर देश, समाज और लोगों की ऐसी दश प्रदान करेंगी जिससे सभी देशवासी हम पर गर्व करेंगे। भावी शिक्षा देश के विकास संबंधी कार्यों पर आधारित होगी। जिसमें शैक्षिक तकनीकी, गुणात्मक विचारधारा, बौद्धिक चिंतन और तर्क संबंधी संप्रेषण कौशल का विकास होगा।

भारतीय विद्या का राष्ट्रीय लक्ष्य

शिक्षा आयोग ने 14 जुलाई 1964 के संकल्प के द्वारा यह निश्चित किया था कि सभी स्तरों के पहलुओं से शिक्षा का विकास, राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसार सामान्य सिद्धांतों पर कार्य किया जाएगा। इस प्रकार कोठारी आयोग ने फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका, सोवियत संघ और जापान के शिक्षाविदों के साथ विद्यार्थियों के उत्कर्ष पर विचार-विमर्श किया था। इसके बाद आधुनिक शिक्षा के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए थे।

आधुनिक शिक्षा के उद्देश्य

सामाजिक भावना का विकास

छात्र बाल्यावस्था से किशोरावस्था में आते ही समाज के संपर्क में आते है और समाज के अन्य लोगों के संपर्क से वह अप्रत्यक्ष रूप से समाज के संपर्क में आता है। जिससे बालक में शिक्षा के द्वारा सामाजिक संवेदना पैदा होती है।

1. पढ़ने-लिखने में कुशलता प्राप्त करना।
2. स्वस्थ जीवन के सिद्धांतो का उपयोग।
3. अपने भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण की जानकारी प्राप्त करना।
4. दैनिक जीवन में विज्ञान के प्रयोग।
5. मौखिक, लिखित विचारों की स्वतंत्रता।
6. राष्ट्रीय चिह्नों के प्रति सम्मान।
7. राष्ट्रीय कार्यक्रम में सहभागिता, श्रम के प्रति गौरव की भावना।
8. सभी धर्मों के प्रति आस्था।
9. लोगों के विचारों को ध्यान से सुनना।
10. हवामान का अध्ययन।
11. सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी प्राप्त करना।
12. विश्व मानव की कल्पना।
13. विभिन्न विषयों एवं सिद्धांतों के प्रति आस्था उत्पन्न करना।
14. अंतर्राष्ट्रीय सदभावना का विकास करना।
15. समस्त समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करना।
16. परिवार, स्थानीय समुदाय एवं राष्ट्र के उत्तरदायित्व का निर्वाह करना।
17. धर्म निरपेक्षता की भावना का विकास।
18. उद्योगों के माध्यम से अनुभव प्राप्त करना।
19. देश के वर्तमान, भूत, भविष्य के प्रति सम्मान, गौरव पर आधारित देशभक्ति की भावना का विकास।
20. व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्वास्थ्य के सिद्धांतों का आचरण करना।

विद्यार्थियों की योग्यता अनुसार शिक्षा

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का व्यवसायीकरण करने से भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों को रस-रूचि के अनुसार प्रशिक्षण मिल सकता है। जिससे छात्रों की गुप्त क्षमताएं और योग्यताएं प्रकट हो सकती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में छात्रों की योग्यता के अनुसार अभ्यासक्रम पूरे साल के लिए तैयार होता है, जिससे छात्र अ%छी तरह से पढ़ सकते है। आधुनिक शिक्षा में विभिन्न कोर्सों के लिए प्रशिक्षण की सुविधाएं होती है। साथ-साथ अंशकालीन एवं पत्राचार पाठ्यक्रम भी होता है।

नई तालीम शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में समानता और भेद

नई तालीम शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में समानता :-

1. दोनों शिक्षा क्षेत्र में छात्रों का ध्येय शिक्षा प्राप्ति का होता है।
2. दोनों शिक्षा पद्धति में अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया होती है।
3. दोनों प्रकार की शिक्षा पद्धति में छात्रों की छुट्टियों के दिन समान होते है।

4. दोनों प्रकार की शिक्षा का ध्येय छात्रों का संर्वांगी विकास होता है।
5. दोनों प्रकार की शिक्षा में छात्रों की कार्यक्षमता पर ध्यान दिया जाता है।
6. दोनों प्रकार की शिक्षा में समानता, बंधुता और नैतिक गुणों का विकास हो ऐसी शिक्षा प्रक्रिया होती है।

नई तालीम शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में भेद

सामान्यत: दोनों प्रकार की शिक्षा में संपूर्णत: समानता है किन्तु कुछ सूक्ष्म भेद पाये जाते है, जो निम्न प्रकार है:-

1. नई तालीम शिक्षा में छात्रावास लाजमी है जबकि आधुनिक शिक्षा पद्धति में छात्रावास लाजमी नही होता।
2. नई तालीम की संस्थाओं में आधुनिक शिक्षा की तुलना में विषयों की अधिकता होती है।
3. नई तालीम शिक्षा में गृह उद्योग, कृषि, पशुपालन, सफाई, प्रार्थना, स्वयंपाकी, रसोई आदि प्रवृत्तियों पर ध्यान दिया जाता है। आधुनिक शिक्षा प्रक्रिया में ऐसी प्रवृत्तियां नही होती है।
4. आधुनिक शिक्षा में वर्गखंड अध्ययन होता है जबकि नई तालीम की शिक्षा वर्गखंड अध्ययन के अलावा प्रवृत्ति के साथ शिक्षा दी जाती है।

अत: उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि दोनों पद्धति में कुछ बाबतों में समानता है और कुछ बाबतों में भेद है, किन्तु दोनों प्रकार की शिक्षा का लक्ष्य सम्पन्न भारतीय नागरिक निर्माण का है। छात्र समाज का अभिन्न अंग बने यह विचार दोनों के गर्भ में रहा है।

उपसंहार

दोनों प्रकार की शिक्षा पद्धति में सारतत्व यह निष्पन्न होता है कि दोनों शिक्षा पद्धति का लक्ष्य राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक निर्माण करने का है। जैसे कि नई तालीम शिक्षा के छात्र बंधुता, समानता, नेतृत्व, नैतिकता आदि गुणों को समान रूनप से सिखाया जाता है। जबकि आधुनिक शिक्षा के छात्रों को तकनीकी शिक्षा सिखाई जाती है। इस प्रकार दोनों शिक्षा पद्धति का उद्देश्य समान है।

संदर्भ सूची

त्रिपाठी म. (2006). *आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा : नई दिल्ली ओमेघा पब्लिकेशन।*

पाठक पी.डी. (2008). *भारतीय शिक्षा के आयोग, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।*

जोषी प्र. (1970). *प्राथमिक शिक्षण पद्धतिओं अने प्रवाहों. अमदाबाद, अनडा बुक डिपो।*

मिश्र शि. (2006). *समय नयी तालीम, वर्धा, नयी तालीम समिति, आश्रम सेवाग्राम।*

पाठक पी.डी. (2009). *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याए, आगरा, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।*